अति निपट कुटिल गति यदपि आप।
तउ दत्त सुद्ध गति छुवंत आप॥
कछु आपुन अध अधगति चलंति।
फल पतितन कहँ ऊरध फलंति॥26॥

शब्दार्थ—अति निपट = अत्यन्त। कुटिल = टेढ़ी। आप = स्वयं। तउ = तो भी। आप = जल। अध = नीचे। अधिगति = पतन। पतितन = पापी। ऊरध = ऊर्ध्व, उच्च।

प्रसंग—महर्षि विश्वामित्र सरयू नदी की महत्ता का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या—यद्यपि तुम स्वयं अत्यन्त टेढ़ी गति वाली हो तो भी औरों को पानी छूते ही शुद्ध गति को देने वाली हो; अर्थात् जो तुम्हारे पानी का स्पर्श कर लेता है, उसे स्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है। तुम स्वयं तो नीचे की ओर अर्थात् अधोगति लेकर चलती हो, किन्तु पापियों को ऊँचे जाने का फल देती हो।

विशेष—नदी की गति कुटिल और अधोमुखी होती है, उपर्युक्त पंक्तियों में केशव ने इसी का वर्णन किया है। भर्तृहरि ने भी नदी के इन स्वाभाविक गुणों का वर्णन इस प्रकार किया है—

'शिरः सार्व स्वर्ग स्वर्गात्पशुतिशिरस्तः क्षितिधरम्।
महीघ्रातोदुगंगादबनेश्चापि जलधिमम्॥
अधोधो गङ्यं पदमुपगतास्तोकमथवा।
विवेकः भ्रष्टग्नां भवति विनिपात इति शतमुखः॥

—नीतिशतक

अलंकार—विरोधाभास, मानवीकरण।